REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2023

बघेलखण्ड में बहने वाली नदियों व भू–सांस्कृतिक का ऐतिहासिक अध्ययन

देवेन्द्र कुमार सोनी[1] , डॉ. अमृता सिंह[2]
[1]शोधार्थी इतिहास, मध्यांचल प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक इतिहास, मध्यांचल प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश –

भारत की संस्कृति में मध्यप्रदेश जगमगाते दीपक के समान है, जिसकी रोशनी की सर्वथा अलग प्रभा और प्रभाव है। यह विभिन्न संस्कृतियों की अनेकता में एकता का जैसे आकर्षक गुलदस्ता है, मध्यप्रदेश, जिसे प्रकृति ने राष्ट्र की वेदी पर जैसे अपने हाथों से सजाकर रख दिया है, जिसका सतरंगी सौन्दर्य और मनमोहक सुगन्ध चारों ओर फैल रहे हैं। यहाँ के जनपदों की आबोहवा में कला, साहित्य और संस्कृति की मधुमयी सुवास तैरती रहती है। यहाँ के लोक समूहों और जनजाति समूहों में प्रतिदिन नृत्य, संगीत, गीत की रसधारा सहज रुप से फूटती रहती है। यहाँ का हर दिन पर्व की तरह आता है और जीवन में आनन्द रस घोलकर स्मृति के रुप में चला जाता है। इस प्रदेश के तुंग–उतुंग शैल शिखर विन्ध्य–सतपुड़ा, मैकल–कैमूर की उपत्यिकाओं के अन्तर से गूँजते अनेक पौराणिक आख्यान और नर्मदा, सोन, सिन्ध, चम्बल, बेतवा, केन, धसान, तवा नदी, ताप्ती आदि सर–सरिताओं के उद्‌गम और मिलन की मिथकथाओं से फूटती सहस्त्र धाराएँ यहाँ के जीवन को आप्लावित ही नहीं करतीं, बल्कि परितृप्त भी करती हैं।

मुख्य शब्द – बघेलखण्ड, नदियाँ एवं भू–सांस्कृतिक।

प्रस्तावना –

यह प्रदेश विन्ध्य गिरि की उपत्यकाओं में अवस्थित है। इसी से देश का नाम विन्ध्य प्रदेश हुआ। इसके दक्षिण भाग में मेकल, पूर्व में कैमोर, उत्तर–पूर्व में केहजुआं, मध्य में पन्ना श्रेणी और सारंग, पश्चिम में भीमटोर तथा पीर जैसी बड़ी–बड़ी गिरि शाखाएं हैं। दक्षिणी–पूर्वी भाग बहुत ही ऊँचा और उत्तर–पूर्व का भाग चौड़ा होता गया है। प्रदेश का दक्षिण–पूर्वी भाग विन्ध्यांचल के सर्वोच्च शिखर अमरंकटक पर बसा हुआ है। इस भाग की ऊँचाई 3000 फिट है। प्रदेश की मुख्य नदियों में सोन, टमस, केन, धसान, बेतवा तथा सिन्धु हैं। ये नदियाँ दक्षिण से आकर उत्तर की और बहती हैं और अपनी–अपनी सहायक नदियों का पानी बटोरती हुई यमुना, गंगा में मिल जाती है। इस प्रदेश का ढाल उत्तर की ओर है। दक्षिण में केवल एक नदी नर्मदा है जो पूर्व से पश्चिम की ओर बहकर मध्य प्रदेश की ओर चली जाती है। इन नदियों में गर्मी में पानी कम रह जाता है, फिर भी ये नदियाँ सुन्दर तथा ऊँचें प्रपात बनाने के लिये सजग रहती है। प्रपात तो पहाड़ी नदियाँ ही बनाती है। अतएव विन्ध्य प्रदेश को प्रपातों का प्रदेश कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। नर्मदा के कपिलधारा और दुग्धधारा, टमस की सहायक बीहर का चचाई, सुहाना का क्योंटी, ओड्डा का बहुती केन का पांडव प्रताप और रनेह, केन

की सहायक किलकिला का कौआ सेहा और समुआ का पाण्डव, कुंडेश्वर तथा सिन्धु का तनकुआ मनोमुग्धकारी प्रपातों में से है।

बघेलखण्ड की धरती का सम्बन्ध अति प्राचीन भारतीय संस्कृति से रहा है। यह भू–भाग रामायणकाल में कोसल प्रान्त के अन्तर्गत था। महाभारत के काल में विराटनगर बघेलखण्ड की भूमि पर था, जो आजकल सोहागपुर के नाम से जाना जाता है। भगवान राम की वनगमन यात्रा इसी क्षेत्र से हुई थी। यहाँ के लोगों में शिव, शाक्त और वैष्णव सम्प्रदाय की परम्परा विद्यमान है। यहाँ नाथपंथी योगियो का खासा प्रभाव है। कबीर पंथ का प्रभाव भी सर्वाधिक है। महात्मा कबीरदास के अनुयायी धर्मदास बाँधवगढ़ के निवासी थी।

विश्लेषण –

बघेलखण्ड में बहने वाली अधिकांश नदियों में वर्ष भर पानी भरा रहता है, और कुछ नदियों में केवल वर्षा ऋतु में पानी रहता है। पठारी भाग होने के कारण अनेक नदियाँ वर्षा ऋतु में भर जाती है और वर्षा के बाद उनका जल स्तर खिसक कर निचले स्थल की ओर चला जाता है, जिससे कुछ नदियों में पानी बरसने के बाद जल एकत्र होता है और बाढ़ की स्थिति आ जाती है, तथा कुछ समय बाद ये नदियाँ खाली भी हो जाती हैं। कुछ नदियों का अस्तित्व वर्षा काल के बाद समाप्त भी हो जाता है। यहाँ पर नदी–नालों की संख्या अधिक है, सुविधा के लिए हमने सभी नदियों का वर्णन न करके महत्वपूर्ण नदियों का वर्णन किया है। इनको जिलेवार बांटना एवं वर्णित करना उचित नही होगा, अधिकांश नदियाँ एक से अधिक जिलों में बहती हैं, इसलिए हमने उनका वर्णन अलग न करके एक साथ ही किया है। हमारे वर्णन का उदेश्य केवल नदियों का परिचय देना है। नदियों का विवरण निम्नानुसार है[1]:–

टमस नदी – पुराणों में इस नदी का प्राचीन नाम 'तमसा' है। टमस नदी का विवरण महाभारत और रामायण में मिलता है। डी.सी. सरकार तमस नदी को आधुनिक टोंस नदी मानते हैं। महाराज सर्वनाथ के खोह ताम्रपत्र में भी उक्त नदी का उल्लेख मिला है। यह नदी सतना जिला के मैहर तहसील के झुकेही स्थान में कैमूर पर्वत श्रृंखलाओं पर 2000 फुट की ऊँचाई पर स्थित तमस कुण्ड से निकलती है। तमस कुण्ड से निकलने के बाद उत्तर–पूर्व की दिशा में 116 मील की यात्रा तय कर मैहर और रीवा जिले के भ्रमण करने के बाद अंत में देवरा ग्राम ($25^0$4′ उत्तर $81^0$44′ पूर्व) के आगे यह नदी संयुक्त प्रांत के इलाहाबाद जिले में निकल जाती है।

मैहर के आस–पास के पहाड़ी प्रदेशों से गुजरने के बाद यह नदी रीवा राज्य के देशी परगनों के सम और उर्वरा प्रदेशों में प्रवेश करती है। इस नदी की प्रधान नदी सतना है, जो माधौगढ़ ($24^0$34′ उत्तर, $81^0$0′ पूर्व) से 5 मील दक्षिण में एक स्थान पर उसमें मिलती है। करीब 40 मील आगे जाने के बाद पुरवा ग्राम के पास टमस नदी केन्द्रस्थ पीठ–प्रदेश (उपरिहार) के छोर पर पहुँच जाती है। इसके बाद, यह नदी एवं इसकी सहायक नदी बीहर और चचाई नदियाँ निम्नस्थ तरिहार प्रदेश में प्रवेश करते समय बड़े एवं दर्शनीय जल–प्रपात बनाती हैं। इन सभी में से बड़ा प्रपात बीहर नदी का माना गया है। 370 फीट की ऊँचाई से इस नदी की 600 फीट चौड़ी श्वेत जलधारा नीचे के कुण्ड में गिरकर आश्चर्यजनक दृश्य पैदा करती है। चचाई नदी के प्रपात की ऊँचाई केवल 300 फीट है परन्तु नीचे पहुँचने पर लगभग 500 गज की दूरी तक इस नाले की जल धारा भयंकर आवेग से बहती है। जब इस प्रपात में जल की धारा भयंकर और तेज रफ्तार से गिरता है, इस समय प्रपात की महिमा बहुत अधिक बढ़ जाती है। बड़े और भारी–भारी शिलाओं से बनकर कई धाराओं में विभाजित होकर जल राशि आगे निकलती है।

ओड्डा नदी – ओड्डा नदी रीवा जिले के मऊगंज तहसील में $24^0$34′ उत्तरी अक्षांश एवं $82^0$48′ पूर्वी देशान्तर में स्थित सीतापुर से निकलती है। नदी का बहाव दक्षिण–पश्चिम से उत्तर पूर्व की तरफ है, इसमें सीलर, जोनकी एवं गोरमा नाले दक्षिण पूर्व से आकर मिल जाते है। उपरोक्त नालों से गोरमा नाला अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। रीवा जिले की अन्य प्रमुख नदियोँ की तरह रीवा से 80 किलोमीटर उत्तर पूर्व मऊगंज तहसील से 340 फीट की ऊँचाई से गिरकर जल प्रपात का निर्माण करती है। जल प्रपात के बाद ओड्डा नदी मैदानी भाग में बहती है, जहाँ पर इसे नैना के नाम से पहचाना जाता है। यह करीब 65 किलोमीटर लम्बी ओड्डा नदी जिले के उत्तर पूर्व में बहने वाली बेलन नदी में मिल जाती है।

महाना नदी – यह नदी हुजूर में 24°33′ उत्तरी अक्षांश एवं 81°28′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित पुरास नामक गाँव से निकलती है। उद्‌गम स्थान से महाना नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। इसमें कुछ नाले जैसे बकचा, सेगरी, पकड़ियार, साहरांव इसके पूर्वी भाग में मिलते है। रीवा जिले से 35 किलोमीटर उत्तर पूर्व क्योटी नामक गाँव में महाना नदी 333 फीट ऊँचा क्योटी जल प्रपात का निर्माण करती है। महाना नदी इसके बाद 8 किलोमीटर तक पहाड़ी घाटियों में बहने के बाद मैदानी भाग में प्रवेश करती है, इस तरह यह नदी 56 किलोमीटर लम्बी त्योंथर तहसील के सितलहा ग्राम के समीप बसुआर ग्राम के पूर्व टमस नदी में मिल जाती है। महाना नदी के पानी से अट्ठाइस पार के निवासियों द्वारा सिंचाई की जाती है, सिंचाई हो जाने से पैदावार में वृद्धि होती है। सिंचाई वाले गाँवों में प्रमुख रूप से लूक, गुलरिहा (कटांगी), नगवाँ, भनिगवाँ, देउरी, कछार, गोहट, रीवा तथा जनकहाई है। उनमें से अधिकांश ग्रामवासी महाना नदी के पानी का उपयोग स्वयं पीने एवं मवेशियों को पिलाने में करते है।

बीहर नदी – मानव सभ्यता के विकास में बीहर नदी अपना विशिष्ट स्थान दर्शाती है। अभी तक में बीहर नदी में दो वेदिकाओं का निर्माण किया जा चुका है। वेदिकाओं का आधार जमाव पत्थरों एवं कंकड़ों से बनाया गया है। बीहर नदी कैमूर नदी में सतना जिले के तमरा ग्राम में 24°25′ उत्तरी अक्षांश एवं 80°58′ पूर्वी देशान्तर में स्थित खरमसेड़ा नामक स्थान से निकलती है। इसका जल उत्तरी पूर्व की ओर बहता है। यह रीवा नगर के पास से निकलती है। इसका जल उत्तर पूर्व की ओर बहता है। रीवा नगर के पास पूर्व की ओर बहकर आने वाली बिछिया नदी इसमें मिलती है, जो इसकी प्रमुख सहायक नदी मानी गयी है। कुछ नाले जैसा लिलजी, अमवा एवं धिरमा पश्चिम दिशा की ओर से आकर इसमें मिलते हैं। रीवा जिले में बीहर नदी लगभग 55 किलोमीटर की लम्बाई में प्रवाहित होती है। रीवा से करीब 45 किलोमीटर की उत्तर चचाई ग्राम में बीहर नदी 368 फीट ऊँचाई से गिरकर चचाई नामक मनोरम जल प्रपात का निर्माण करती है।

बिछिया नदी – बिछिया नदी गुढ़ तहसील में 24°33′ उत्तरी अक्षांस एवं 81°42′ पूर्वी देशान्तर में कैमूर पहाड़ी के उमरी नामक ग्राम से निकलती है। उद्‌गम स्थान के बाद से इस नदी का प्रवाह मार्ग टेढ़ा हो जाता है, कैमूर पर्वत श्रृंखला के कई नाले इसमें आकर मिलते है, जिसके कारण इसका आकार बिच्छू जैसे हो गया है, सम्भवतः इसी कारण इसका नाम बिछिया हो गया है। रीवा नगर के पास बीहर नदी से पूर्व यह करीब 58 किलोमीटर लम्बे क्षेत्र में संकरी एवं तंग घाटियों को चीरती हुई प्रवाहित होती है। रीवा में बीहर और बिछिया का सगंम है, जिससे दोनों नदियों का रीवा निवासियों के लिए बहुत ज्यादा महत्व है। बिछिया नदी बीहर की मुख्य सहायक नदी है।

बेलन नदी – रीवा जिले के उत्तरी पूर्वी भाग में 24°56′ उत्तरी अक्षांश एवं 81°52′ पूर्वी देशान्तर पर बेलन नदी प्रवेश करती है। यह नदी जिले में दक्षिण पूर्व से उत्तर पश्चिम की ओर बहती है। नदी सहायक नालों के साथ ओड्‌डा या नैना नदी दक्षिण की ओर से आकर बेलन नदी में मिल जाती है। जिले में करीब 25 किलोमीटर बहकर यह टमस नदी में मिल जाती है। बेलन नदी उत्तर प्रदेश जिले में कैमूर पर्वत श्रृंखला से निकलती है। प्रस्तर युगीन संस्कृति की दृष्टि से दक्षिण इलाहाबाद तथा पश्चिम मिर्जापुर में, बेलन अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है। बेलन नदी के विस्तृत क्षेत्रों में सिमेण्टेड ग्रैवल के जमाव पाये जाते है, जिन्हे बेलन नदी, अपनी सहायक नदी तथा अन्य नालों द्वारा जो पूर्णतया पूर्व तथा दक्षिण दिशाओं से आकर बेलन नदी में मिलती है।

नर्मदा नदी – नर्मदा नदी भारत की महत्वपूर्ण नदी है। नर्मदा नदी की गणना भारत वर्ष की सात पवित्र नदियों में की जाती है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इनका अत्यधिक महत्व है। रामायण में वर्णन किया गया है कि सुग्रीव ने सीता की खोज के लिए अंगद को नर्मदा तट तक भेजा था। महाकवि कालिदास ने नर्मदा नदी का परिचय मेघदूत में करवाया है। राज शेखर ने लिखा है विन्ध्यस्योद्रे परिसर नदी नर्मदा अमरकोष और कर्पूरमंजरी में इसको क्रमशः मेकल कन्या और मेकल सुना कहा गया है। बुधगुपत के एरण अभिलेख एवं मलय सिंह के रीवा अभिलेख द्वारा नर्मदा नदी का विवरण प्राप्त होता है।

नर्मदा नदी को मध्यप्रदेश का जीवन रेखा माना गया है, जो शहडोल जिले के अमरकंटक पर्वत की मेकल श्रृंखला से निकलती है। उद्‌गम स्थान के आगे करीब 1 किलोमीटर तक यह दिखाई न देती, इसके बाद एक पतली धारा के रूप में प्रकट होकर धीमी गति से प्रवाहित होती है। नर्मदा कुण्ड से करीब 6 किलोमीटर की दूरी पर कपिलधारा है। कपिल धारा के पास नर्मदा नदी करीब 50 मीटर ऊपर से गिरकर एक मनमोहक

जल प्रपात बनाती है। चट्टानों पर गिरने वाला पानी दूध के समान दिखता है, जिसके कारण उक्त प्रपात को दूध धारा भी कहते है।[2]

नर्मदा का उद्गम स्थल, प्रवाह का रास्ता का, सागर का संगम ये तीनों अत्यन्त आकर्षक और मनोरंजक प्रतीत होते है। उत्तर दिशा की तरफ विन्ध्य और दक्षिण दिशा की तरफ सतुपड़ा पर्वत की अनाच्छादित शैलमालाएँ कभी नजदीक और कभी दूर रहकर भी अलग प्रतीत नहीं होती है।

नर्मदा नदी का उद्गम स्थान अमरकंटक अपने आप में एक तीर्थ स्थल के रूप में माना गया है, जहाँ देवालयों से आकृत एक कुण्ड है। त्रिपुरी के कर्चुली शाषक लक्ष्मीकर्ण ने यहां तीन गर्भगृहों से रहित एक देवप्रसाद का निर्माण कराया था। कुण्ड के पश्चिम दिशा की ओर गोमुख से बहकर पानी दूसरी तरफ इकठ्ठा होता है, जिसे कोटितीर्थ कहा जाता है। अमरकंटक से करीब 5 किलोमीटर दूरी पर चलने के बाद करीब चबूतरा मिलता है, जहाँ पर संत कबीरदास ने आत्मचिन्तन किया था, यह स्थल बिलासपुर, शहडोल और मण्डला जिलों की सीमा संगम पर स्थित बताया गया है।

डॉ. कन्यैयालाल अग्रवाल के मतानुसार, कालान्तर में राजा हृदयशाह ने नर्मदा तट पर स्थित रामनगर में अपनी राजधानी स्थापित किया था। मण्डला से करीब 6 किलोमीटर चलकर नर्मदा का प्रवाह अनेक धाराओं में विभाजित हो जाता है, जिसे सहस्त्र धारा कहा गया है। अनुश्रुतियों के अनुसार सहस्त्रधारा के तट पर आद्य शंकराचार्य ने गुरू से ज्ञान प्राप्त कर नर्मदाष्टक की रचना किया था।[3]

अंत में नर्मदा जबलपुर जिले में प्रवेश करती है, जबलपुर से करीब 12 किलोमीटर दूर तेवर है, जिसकी प्राचीन नाम त्रिपुरी था, जो कलचुरियों की राजधानी थी। इसके पास ही बैद्यनाथ गौरीशंकर का मन्दिर है, जिसमें लक्ष्मी विष्णु तथा सूर्य की मनोहर मूर्तियाँ है। कलचुरि शाषक नरसिंहदेव और उसकी माता अल्हण देवी ने यह मन्दिर दसवीं शदी में बनवाया था। इस तरह जबलपुर के संगमरमर युक्त शैलप्रदेश से होती हुई नर्मदा नदी अंत में खंभात की खाड़ी में गिरकर अरब सागर में विलुप्त हो जाती है।

नर्मदा का उद्गम स्थल प्रवाह का रास्ता सागर का संगम ये तीनों अत्यन्त आकर्षक और मनोरंजक प्रतीत होते है। उत्तर दिशा की तरफ विन्ध्य और दक्षिण दिशा की तरफ सतपुड़ा पर्वत की अनाच्छादित शैलभाषाएं कभी नजदीक और कभी दूर रहकर भी अलग प्रतीत नहीं होती।

सोन नदी – सोन नदी का उद्गम स्थल नर्मदा के समीप ही है। सोन नदी शहडोल जिले से मैकल पर्वत के अमरकण्टक नामक श्रेणी ($22^0$40′ उत्तर $81^0$46′ पूर्व) से निकलती है। महाभारत, रामायण, पतंजलि के महाकाव्य में इस नदी का उल्लेख किया गया है। महाकवि कालिदास ने इस नदी की विशाल लहरों का वर्णन किया है। बाणभट्ट ने भी हर्षचरित में सोन नदी के महत्व का उल्लेख किया गया है। राज्यशेखर ने काव्य मीमांसा में इस नदी को वर्णित किया है। प्रबोधशिव के मुर्गी अभिलेख और चन्द्रेह अभिलेख में इसे शोणानंद (पुलिंग) माना गया है। सोन नदी के उद्गम स्थान का पौराणिक नाम सोन भद्रा माना गया है। वर्तमान में इसका प्रचलित नाम सोन मुण्डा है, जो अमरकण्टक के उत्तर की ओर स्थित है। अपने उद्गम स्थल से थोड़ी दूर चलने पर अमरकण्टक पठार के किनारे एक जल प्रपात की रचना करती है तथा कुछ दूर तक बिलासपुर जिले से बहने के बाद यह शहडोल जिले के सोहागपुर तहसील में प्रवेश करती है। यहाँ से जाने के बाद यह ब्योहारी तथा बांधवगढ़ की समग्र सीमा बनाती है। बांधवगढ़ तहसील के ओवरा गांव के पास जोहिला नदी इसमें मिल जाती है।

सोन नदी सतना तथा शहडोल की सीमा बनाते हुए सीधी जिले की गोपद बनास तहसील में प्रवेश करती हैं, जहाँ पर गोपद नदी का संगम होता है। इस संगम को भॅवरसेन के नाम से जाना है। सीधी जिले की पश्चिम सीमा पर दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हुई बनास नदी भी सोन में मिल जाती है। यह नदी के पूरे सीधी जिले में कैमूर पर्वत श्रृंखला के समानान्तर लगभग 15 किलोमीटर चौड़ी घाटी का निर्माण करती है और धीरे–धीरे अपना विशाल रूप धारण करती गयी। पटना के पास गंगा से मिलने के लिए इसका हृदय फूल उठा और इसने अपनी भुजाएँ मानों पसार दी। इसका कई मील का लम्बा पाट आश्चर्य चकित करने वाला लगता है।[4] अतः यह कहना उचित है कि सोन नदी का लाल जीवन अमरकण्टक में, किशोर जीवन भंवरसेन में और पूर्ण यौवन पटना के समीप दर्शनीय है। ऐसी पौराणिक मान्यता है कि सोन को पवित्र नदी की मान्यता प्राप्त है, जिस कारण श्रद्धालू यहाँ प्रतिवर्ष स्नान करने आया करते हैं, स्नान का प्रमुख स्थान भंवरसेन को माना गया है।

गोपद नदी : – गोपद नदी सरगुजा जिले के सूरजपुर के उत्तर–पश्चिम में स्थित रांची नामक पहाड़ी से निकलती है। सरगुजा जिले से निकलकर सीधी जिले में प्रवेश करती है तथा सीधी, सिंगरौली एवं सरगुजा जिले की सीमा में ही बहती है। गोपद की एक प्रमुख सहायिका मोहना नदी है, जो सिंगरौली तहसील के उत्तर–पश्चिम से निकलकर देवसर नामक स्थान में पहुँचकर गोपद नदी में विलीन हो जाती है। गोपद नदी सीधी जिले के बर्दी ग्राम के पास सोन नदी में मिल जाती है। गोपद और बनास मुर्दी के नाम पर ही सीधी जिले में एक तहसील का नाम गोपद बनास रखा गया है, जो इसके महत्व को व्यक्त करता है।

बनास नदी :– बनास नदी का उद्‌गम स्थल सरगुजा जिला है, यह नदी दादर ग्राम से पूर्वोत्तर की ओर कुछ आगे ($24^0$17′ उत्तर, $81^0$31′ पूर्व) दाहिने तट में प्रवेश करती है, उसे भंवरसेन के नाम से जाना जाता है। संगम के उत्तरी ओर नदी के किनारे भूतपूर्व रीवा नरेश महाराजा गुलाब सिंह द्वारा निर्मित शिकार गंज नामक कोठी है। बनास का पानी सफेद और सोन नदी का पानी देखने में काला दिखाई देता है, साथ ही सोन यमुना के समान ज्यादा गहरी और बनास नदी गंगा के समान उथली है, जो प्रयाग में गंगा, यमुना के संगम को याद दिलाता है।

जोहिला नदी :– यह नदी अमरकण्टक से निकलती है, जो कुछ दूर दक्षिण की ओर बहकर कुछ दूर में पूर्व की ओर बहने लगती है। जोहिला नदी अमरकण्टक से निकलकर ($23^0$37′ उत्तर $81^0$16′ पूर्व) बरवाही, मानपुर, निपनिया, चांदा आदि गाँवों से होती हुई बांधवगढ़ तहसील के ओपरा गांव के समीप सोन नदी में मिल जाती है। महाभारत तथा पुराणों में भी जोहिला नदी का उल्लेख मिलता है। रघुवंश में भी ज्योतिरथा नामक एक नदी की विवरण मिलता है। महाभारत में सोन एवं ज्योतिरथा के संगम को अत्यन्त ज्यादा पवित्र माना गया है।

महानदी – महानदी विन्ध्य प्रदेश के सीमावर्ती गाँव अखडकार जिला जबलपुर के पास से निकलकर बांधवगढ़ तहसील की पश्चिमी सीमा बनाती हुई पथरहटा गाँव के समीप से जबलपुर जिले में बहती है तथा ब्योहारी तहसील के सिरसा गाँव के समीप यह नदी सोन नदी में मिल जाती है। अतः इस नदी को सोन नदी की सहायक नदी माना जाता है।

सतना नदीः– सतना नदी का उद्‌गम पन्ना पहाड़ियों का रामपुर ग्राम (24^0 40′25′′ पूर्व) के निकट लगभग 519 फिट की ऊँचाई से होती है। यह नदी सतना जिले के हृदय स्थल से प्रवाहित होती है। यह इस नदी का प्रवाह दक्षिण दिशा की ओर होती है तथा बाद में यह उत्तर पूर्व की ओर घूम जाती है। सतना नदी पिपांशा ग्राम के पास सतना जिले में प्रवेश करती है तथा करीब 6 किलोमीटर सतना तथा पन्ना जिलों की सीमा का निर्धारण करती है। यह नदी आगे चलकर सतना जिले की दो तहसीलों रघुराजनगर एवं नागौद के बीच लगभग 30 किलोमीटर तक सीमा निर्धारण का कार्य करती है। गर्मियों में इस नदी के जलधारा का घनत्व बहुत कम हो जाता है, लेकिन नदी में वर्ष भर पानी प्रवाहित होता रहता है। अन्त में यह नदी सतना नगर के 6 किलोमीटर पूर्व ग्राम के निकट दक्षिण दिशा की ओर टमस नदी में मिल जाती है।

पैसुनी नदीः– पैसुनी नदी का नाम परभ्रावणी एवं मन्दाकिनी नाम ज्यादा प्रसिद्ध है, यह लघु सरिता एक तरफ से रामायण युगीन स्मृतियों से युक्त है, और दूसरी ओर हृदय मोहने वाली सुषमा का केन्द्र है। सतना जिले का रघुराजनगर तहसील का पाथर कछार क्षेत्र इसका उद्‌गम स्थान है। चित्रकूट का सम्पूर्ण रामचरित पैसुनी नदी के तट पर हुआ माना जाता है। वर्तमान समय में हर माह की अमावस्या तिथि में तीर्थयात्री पैसुनी नदी के जल में स्नान करके कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा कर कामतानाथ जी का दर्शन करते है। यह प्राचीन मान्यता है कि कामतानाथ जी का नियमित हर आमावस्या तिथि में दर्शन कर परिक्रमा करने से सभी विघ्न बाधाएँ कट जाती है।[5]

सिमरावल नदी– यह नदी टमस नदी की एक प्रमुख वामवर्ती सहायक नदी है, जो पन्ना पहाड़ियों में स्थित परिहार ग्राम से निकलती है। ग्राम सरोही के निकट सरोगर नाला तथा ग्राम तूरी के निकट हटिया नाला इसमें मिल जाते हैं।

उपरोक्त नदियों के अलावा भी कुछ नदियों एवं नालों का विवरण बघेलखण्ड में मिलता है, परन्तु नदियों एवं नालों का संबंध इन्ही में से कही न कही है, अतः अलग से वर्णन करना उचित प्रतीत नही होता है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः भारतवर्ष एक गौरवशाली इतिहास और सांस्कृतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण देश है। यहाँ के विभिन्न राजवंशों ने विभिन्न कालखण्डों में भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में योगदान देते हुए भारतीय सभ्यता को समृद्ध और सुसंस्कृत किया है। यद्यपि भारतीय इतिहास का लेखन सदा दिल्ली की सत्ता को केन्द्र में रखते हुए लिखा गया, जिससे क्षेत्रीय इतिहास, राजवंशों और उनके सांस्कृतिक अवदानों को वह स्थान नहीं मिला, जिसके वे अधिकारी थे। ऐसा ही एक राजवंश है, बघेल शासकों का, जिन्होंने 14वीं सदी से लेकर भारत की स्वतंत्रता तक बघेलखण्ड पर शासन किया। बघेल राजवंश के नाम पर ही उनके द्वारा शासित भूखण्ड बघेलखण्ड कहलाया। यह बघेलखड पूर्वी मध्यप्रदेश का एक सीमांत भाग है जो उत्तरप्रदेश की पश्चिमी सीमाओं से मिलता है। भौगोलिक मानचित्र में बघेलखण्ड में मध्यप्रदेश के रीवा, सतना, शहडोल, सीधी तथा सिंगरौली, अनूपपुर, उमरिया जिले और उत्तरप्रदेश का चित्रकूट जिला सम्मिलित है।

संदर्भ –

[1] डॉ. शालिकराम मिश्रा एवं डॉ. आराधना मिश्रा – प्राचीन बघेलखण्ड का इतिहास, अनिल प्रिंटर्स, रीवा (म.प्र.), वर्ष 2021, पृष्ठ 55, 56

[2] डॉ. कृष्णेन्द्र कुमार मिश्र – प्राचीन बघेलखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), वर्ष 2007, पृष्ठ 44, 45

[3] डॉ. शालिकराम मिश्रा एवं डॉ. आराधना मिश्रा – प्राचीन बघेलखण्ड का इतिहास, अनिल प्रिंटर्स, रीवा(म.प्र.), वर्ष 2021, पृष्ठ 59, 60

[4] डॉ. शालिकराम मिश्रा एवं डॉ. आराधना मिश्रा – प्राचीन बघेलखण्ड का इतिहास, अनिल प्रिंटर्स, रीवा (म.प्र.), वर्ष 2021, पृष्ठ 61, 62

[5] डॉ. शालिकराम मिश्रा एवं डॉ. आराधना मिश्रा – प्राचीन बघेलखण्ड का इतिहास, अनिल प्रिंटर्स, रीवा(म.प्र.), वर्ष 2021, पृष्ठ 63, 64